# चाश्त और अव्वाबीन की नमाज़ का वकत

हजरत मुफ्ती अहमद खानपूरी द.ब.

## चाश्त के वकत की तफसील

चाश्त के वकत के बारे मे मुख्तसर यही कहा जाता हे के जब सुरज उंचा हो जाये और मकरूह वकत खतम हो जाये वहां से चाश्त का वकत शुरू हो जाता हे और ज़वाल तक रहता हे लेकिन उसकी तफसील को ज़रा ज़हन रखने की ज़रूरत हे.

देखो पहले में आप को तुलू और गुरूब के वकत के सिलसिले मे फरक क्या हे वो बतलाता हु सूरज तुलू होने के बाद जब उस्की सुरखी खतम हो कर उसमे इतनी रोशनी आ जाये के आंखे उस्के सामने टिक न सके तो मकरूह वकत खतम हो गया और उसमे अंदाज़न 15 मिनिट लगते हे लेकिन ये याद रहे के मिनटो की तादाद मुतय्यन नही हे इसलीये के गरमी के ज़माने मे सूरज के तुलू होने के बाद चंद मिनटो ही मे धूप मे तेज़ी आ जाती हे और सरदी के ज़माने मे तेज़ी आने मे कुछ वकत लगता हे.

इसलीये जो लोग यु समजते हे के टाइम टेबल मे तुलू का जो वकत लिखा हूवा होता हे उस पर 10 मिनिट बढा दें

तो काफी हे ये सहीह नही हे हाला के टाइम टेबल बनाने वाले हमारे भाइ जनाब अब्दुल हफीज़ मनीयार ने उस हिदायत मे लिखा हे के इस टाइम टेबल मे सूरज के तुलू होने का वो वकत लिखा हे के जब सूरज का पहला किनारा निकलता हे इसलीये के पहला किनारा नज़र आते ही नमाज़ पढना ममनू हो जाता हे और गुरूब के वकत मे लिखा हे के जब सूरज का आखरी किनारा डूबता हे इसलीये तुलू के वकत मे सूरज का पहला किनारा नज़र आने का वकत लिखा हूवा हे और गुरूब मे सूरज का आखरी किनारा आंखो से ओजल हो जाये और सूरज छुप जाये वो वकत लिखा हूवा हे और सूरज को पूरा निकलने मे तकरीबन पोने तीन मिनिट लगते हे.

अब अगर आपने टाइम टेबल मे लिखे हूवे वकत से 10 मिनिट का हिसाब लगाया तो पूरा सूरज निकलने के बाद सवा सात मिनिट ही रह गये और इतनी देर मे कया होता हे वो देख लिजये इसलीये ये तैय न कर लिया जाये के 10 ही मिनट बाद मकरूह वकत खतम हो जाता हे बल्के जैसा मौका हो उस्के मुताबिक मामला किया जाये और उसमे बचने की ज़रूरत हे.
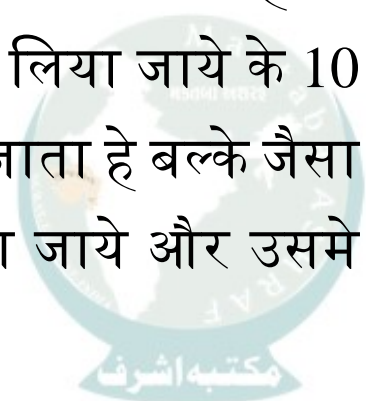
तो जब सूरज तुलू होने के बाद उंचाइ पर आजाये वहां से चाश्त का वकत शुरू होता हे मेने पहले भी बतलाया था के हज़राते मुहाद्दीशीन के यहां इशराक भी चाश्त ही का एक हिस्सा हे गोया वो हज़रात चाशत और इशराक मे फर्क नही करते बल्के इशराक को भी चाश्त ही का नाम देते हे इसलीये उन्होने यु कहा के सूरज उंचा होते ही चाश्त का वकत शुरू हो गया और ज़वाल से पहले तक रहता हे अगरचे अफज़ल ये हे के जब गरमी मे तेज़ी आ जाये उस वकत चाश्त पढो यानी देर से पढो.

## अव्वाबीन की नमाज़

ज़ैद बिन अरकम रदी ने कुछ लोगो को देखा के धूप मे तेज़ी आने से पहले ही चाश्त की नमाज़ अदा फरमा रहे थे उन्को इस तरह नमाज़ पढता हूवा देखकर फरमाया उनको मालूम हे के ये नमाज़ उस्के अलावा दूसरे वकत मे यानी सूरज ज़रा उंचा हो जाये और धूप मे तेज़ी आजाये उस वकत पडना बेहतर हे इसलीये के हुजूरﷺ ने फरमाया हे के जो लोग अल्लाह की तरफ रूजू करने वाले हे उन्की नमाज़ उस वकत होती हे जब के उंट के बच्चों के पाउं जलने लगें. इफादात- फिसाल ये फसीलुन की जमा हे यानी उंट का छोटा बच्चा हे धूप मे जब तेज़ी आयेगी तो गरमी होगी

और गरमी मे आप खुले पैर चलेगे तो पाउं जलेगे और उंट के पाउं नही जलते लेकिन बच्चा चूंके नाज़ुक होता हे इसलीये उसके पाउं जलते हे और ये उसी वकत होता हे जब धूप मे तेज़ी आजाती हे और जैसा के हम सब जान्ते हे के वो तकरीबन 10.30 से 11 का वकत होता हे यही चाश्त का वकत हे.

देखो हदीस मे लफज़े अव्वाबीन चाश्त की नमाज़ के लिये बोला गया हे और मगरिब की नमाज़ के बाद जो नफल नमाज़ पढी जाती हे जिस्को हम अव्वाबीन की नमाज़ कहते हे वो इतलाक हदीस मे नही आया हे.

अरबी ज़ुबान मे अव्वाब उसे कहते हे, जो बन्दे अल्लाह की तरफ खूब रूजू होने वाला और अपने गुनाहो से तौबा करने वाला हो.

जो बन्दे अल्लाह की तरफ ज़्यादा रूजू होते हे और अपने गुनाहों से तौबा करते हे वो चाश्त की नमाज़ का भी और मगरिब के बाद पढी जाने वाली नमाज़ों का भी एहतेमाम करते हे इसलीये लुगवी और डीकशनरी तरजुमा के एतेबार से दोनो नमाज़ों को अव्वाबीन कहा जा सकता हे.

हवाला- हदीस के इस्लाही मजामीन उर्दू से रिवायत का खुलासा किया गया